द्रौपदी स्वयंवर

कक्षा-7 विषय- हिंदी
बाल महाभारत कथा

श्री शिवदत्त शर्मा

द्रौपदी स्वयंवर

(सार)

जब पांडव एक चक्रा नगरी में ब्राह्मण के वेश में रह रहे थे | तभी पांचाल नरेश द्रुपद अपनी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर कर रहे थे | माता कुंती के साथ पांडव भी ब्राह्मण वेश में पांचाल देश पहुँचकर कुम्हार की झोंपड़ी में रहने लगे |

सभी कौरव ,कर्ण, शिशुपाल,जरासंध आदि अनेक वीर दूर-दूर से स्वयंवर के लिए आए थे | राजा द्रुपद ने घोषणा की कि जो राजकुमार पानी में प्रतिबिंब देखकर मछली को गिरा देगा उसी को द्रौपदी वरमाला पहनाएगी |

लक्ष्य बेधन हेतु सभी वीर आगे आए लेकिन असफल रहे | तभी ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन लक्ष्य बेधन हेतु सामने आए | अर्जुन ने धनुष पर डोरी चढ़ाकर एक के बाद एक पांच बाण उस घूमते हुए चक्कर में मारे निशाना टूटकर नीचे गिर गया | सभी में कोलाहल मच गया | बाजे बज उठे | द्रौपदी ने वरमाला अर्जुन को पहना दी |

भीम और अर्जुन द्रौपदी को साथ लेकर कुम्हार की कुटिया में जाने लगे तो धृष्टद्युम्न भी उनके पीछे हो लिया | कुटिया के दृश्य को देखकर धृष्टद्युम्न अपने पिता से बोला “पिताजी मुझे तो ऐसा लगता है कि वे सभी पांडव हैं |”

युधिष्ठिर ने राजा द्रुपद को अपना सही परिचय दिया | यह जानकार द्रुपद अति प्रसन्न हुए | माँ की आज्ञा और सबकी सम्मति से द्रौपदी के साथ पांचों पांडवों का विवाह हो गया।

भावबोधात्मक प्रश्न

१.पांचाल देश में पांडव किस वेश में गए ?
उत्तर ब्राह्मण वेश में
२. द्रौपदी स्वयंवर किसने जीता ?
उत्तर अर्जुन ने।

गृह- कार्य

१. द्रौपदी स्वयंवर की क्या शर्त थी ?

२. द्रौपदी स्वयंवर के प्रमुख वीरों के नाम बताओ |

३. कुम्हार की कुटिया से लौटकर धृष्टद्युम्न ने अपने पिता से क्या बताया ?

धन्यवाद